Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 16th Jan. 2019, Revised on 28th Jan. 2019; Accepted 30th Jan. 2019

आलेख

आधुनिकता एवं भारतीय आधुनिकता में शिक्षा का योगदान

* **डा. मोनिका जैन**, प्राचार्य
मॉडर्न शिक्षा समिति शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर
निवास– 80/427, शंकराचार्य मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
ईमेलः–dr.monika.jain1998@gmail.com मोबाईल –9928070027

मुख्य शब्द – आधुनिकता, आधुनिक–शिक्षा, परानुभूति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अमूर्तिकरण, भविष्योनमुखता, धर्मनिरपेक्षता, सार्वभौमिक दृष्टिकोण, प्रौद्योगिकी, वैयक्तिकता, मुक्ति उन्नत आदि।

सारांश

आधुनिकता बुद्धिवादी बनने, अंधविश्वास से बाहर निकलने, नैतिकता में उदारता बरतने की एक प्रक्रिया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता की विशेषताओं में वैश्विक आधुनिकता के विचार को रखा है जैसे परानुभूति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अमूर्तिकरण, भविष्योनमुखता, धर्मनिरपेक्षता, सार्वभौमिक दृष्टिकोण, प्रौद्योगिकी, वैयक्तिकता, मुक्ति उन्नत आदि से है। आधुनिक व्यक्ति वह है जो विचार और सहानुभूति के परम्परागत तरीके त्याग दे, जिसका मस्तिषक नये विचारों को स्वीकार करने के लिए खुला हो, विवेकशील और धर्मनिरपेक्ष हो तथा जो समानता, न्याय व स्वतंत्रता में विश्वास रखता हो। आधुनिकता का केन्द्रीय संदर्भ तर्क और विवेक होता है इसमें संवेगों और भावुकता का कोई स्थान नहीं होता। आधुनिकता में मानवता निहित होती है। भारत एक सभ्यता का समाज है। परम्पराओं ने इसे सैकडों वर्षो तक गढा है। इसकी अपने में एक विशिष्ट पहचान है। इसका अपना इतिहास है। यहॉ कई भाषाएं और सांस्कृतिक क्षेत्र है। यहॉ जब आधुनिकता आई, तब इसका स्वरूप यहॉ की परम्परा के अनुसार ढल गया। कहीं ऐसा हुआ कि परम्परा आधुनिकता में बदल गई और कहीं आधुनिकता नई परम्परा में आ गई। शिक्षा भारत में आधुनिकता लाने में सर्वाधिक प्रभावशाली उपकरण है, जिसके फलस्वरूप राष्ट्रवाद, उदारवाद एवं स्वतंत्रता हेतु लोगो की आकांक्षाओं का संक्रियकरण हुआ है। यह एक प्रबुद्ध बुद्धिजीवी वर्ग के विकास के लिये उत्तरदायी है, जिसने न केवल स्वतंत्रता के लिये एक आंदोलन चलाया, अपितु सामाजिक सांस्कृतिक सुधारों के लिए अथक संघर्ष किया। शिक्षा उदार विचारधारा को जन्म देती है और आधुनिक मानव तैयार करती है।

आधुनिकता सोच–समझ के एक विशिष्ट दृष्टिकोण (तार्किक–वैज्ञानिक) को परिलक्षित करती है। आधुनिकतावाद समाज की एक विशिष्ट दशा या स्थिति को प्रदर्शित करने वाली एक विचारधारा है, जबकि इसे गतिशील बनाये रखने वाली प्रक्रिया को आधुनिकता कहते हैं। सोचने–समझने और व्यवहार करने के ऐसे तौर–तरीकों को सामान्यतः आधुनिकता कहा जाता है जिसमें प्रगति की आकांक्षा, विकास की आशा और परिवर्तन के अनुरूप अपने आपको ढालने का भाव निहित होता है। यह ऐसी संभावनाओं के द्वार खोलने के प्रति विश्वास करने वाली एक धारणा है जो इस बात पर बल देती है कि बौद्धिक एवं तार्किक विश्व के माध्यम से सामाजिक प्रगति हसिल की जा सकती है। आधुनिकता बुद्धिवादी बनने, अंधविश्वास से बाहर निकलने, नैतिकता में उदारता बरतने की एक प्रक्रिया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता की विशेषताओं में वैश्विक आधुनिकता के विचार को रखा है जैसे परानुभूति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, अमूर्तिकरण, भविष्योनमुखता, धर्मनिरपेक्षता, सार्वभौमिक दृष्टिकोण, प्रौद्योगिकी, वैयक्तिकता, मुक्ति उन्नत आदि से है। आधुनिक व्यक्ति वह है जो विचार और सहानुभूति के परम्परागत तरीके त्याग दे, जिसका मस्तिषक नये विचारों को स्वीकार करने के लिए खुला हो, विवेकशील और धर्मनिरपेक्ष हो तथा जो समानता, न्याय व स्वतंत्रता में विश्वास रखता हो। आधुनिकता का केन्द्रीय संदर्भ तर्क और विवेक होता है इसमें संवेगों और भावुकता का कोई स्थान नहीं होता। आधुनिकता में मानवता निहित होती

है। यह सही है कि आधुनिकता तकनीकी तंत्र को बढावा देती है, लेकिन जब यह मानव केन्द्रित नहीं होती इसके अस्तित्व का कोई मतलब नहीं है। आधुनिकता का बुनियादी तत्व सार्वभौमिक सांस्कृतिक है जिसमें प्रजातंत्र, समानता, धर्मनिरपेक्षता आदि आधुनिक मूल्य है। आधुनिकता किसी पद या स्थिति को अभिव्यक्त नहीं करती वरन् एक प्रक्रिया को अभिव्यक्त करती है। आधुनिकता कोई दर्शन या आंदोलन नहीं है, यह तो परिवर्तन की एक प्रक्रिया है इसमें आधुनिक बनने की संकल्पना निहित है जो स्थिर समाजों की अपेक्षा गतिशील समाजों में अधिक पाई जाती है। गतिशील समाज का अभिप्राय जनतांत्रिक समाजों से है जिनका आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक विकास वैज्ञानिक विधियों पर आधारित है। आधुनिकता की व्यापकता उसमें निहित वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण में है। वैश्वीकरण ही उदारीकरण और निजीकरण को प्रोत्साहित करता है।

आधुनिकता एक दृष्टिकोण है, जो परम्पराओं मे परिवर्तन किये जाने के उपरांत विकसित होता है। हमारे चिंतन और व्यवहार दोनों में दृष्टिगोचर होता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आधुनिकता का एक लक्षण यह भी है कि मानव संसाधन पर अधिक से अधिक निवेश हो ताकि मनुष्यों की क्षमता का अधिक से अधिक उपयोग हो सके। आधुनिकता का विश्वास है कि समाज की नई संरचना के लिए संस्थाओं में भी नवीनता आनी चहिए, नयी–नयी आवश्यकताओं के अनुरूप नयी नयी संस्थाओं का जन्म होना चाहिये। ये संस्थाए हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये प्रकार्यत्मिक रूप से सक्षम होनी चाहिये। आधुनिकता उपयोगवाद संस्कृति में विश्वास रखती है। वस्तुओं में उत्पादन का उद्धेश्य उपभोग होता है, जो अंततः मनुष्य के लिये है। उपभोग मानवीय जीवन को अधिक ऐश्वर्य सम्पन्न बनाता है, अतः आधुनिकता का कोई भी स्वरूप देखे इसमें पूंजीवाद, औद्योगिकरण, प्रजातंत्र और विवेक या बुद्धिसंगतता केन्द्रीय लक्षणों के रूप में दिखाई देते है। परंतु आधुनिकता के विभिन्न लक्षणों के होते हुए भी विवेक इसका प्राणवायु है। शिक्षा व्यक्ति को विवेकपूर्ण प्राणी बनाने में सक्षम है।

आधुनिकता वह है जिसमें समानता का व्यवहार होता है और दूसरों के लिए आदर भाव होता है। इसका यह अर्थ नही है कि आधुनिक समाज में सभी लोग समान होते है। उनमें कई तरह की गैर–बराबरी होती है, लेकिन फिर भी एक ऐसी आधारभूत बराबरी होती है जिस कारण लोग अपनी मान मर्यादा के साथ रह सकते है और वास्तव में अपनी जीवित रहने की दशाओं को बढिया बनाने के अवसरों का लाभ ले सकते है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आधुनिक व्यक्ति वह है

– परानुभूति गत्यात्मकता अर्थात् परिस्थिति के अनुसार लचीला व नमनीय होना।

– उच्च सहभागिता अर्थात विश्व की सभी सामाजिक और राजनैतिक गतिविधियों में रूचि व सक्रिय भागीदारी।

–लक्ष्यों के प्रति स्पष्ट व तालमेल बैठाना।

– उत्तम सकलता प्राप्त करने के लिये भरसक प्रयासरत रहना।

– तर्कपूर्ण उद्धेश्य और साधनों का आंकलन करना।

– धन, कार्य, बचत और जोखिम उठाने के प्रति नूतन दृष्टिकोण रखना।

– परिवर्तन की वांछनीयता और संभावना में विश्वास रखना।

– सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक अनुशासन में विश्वास एवं उनका पालन करना।

– उच्च स्तरीय प्रौद्योगिकी में विश्वास एवं उसका प्रयोग करना।

– व्यक्ति और राष्ट्र की आर्थिक स्थिति का तीव्र गति से विकास करना जिसमें प्रतिव्यक्ति एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि और नवीन आदर्शो एवं मूल्यों की स्थापना होती है।

भारत एक सभ्यता का समाज है। परम्पराओं ने इसे सैकडों वर्षो तक गढा है। इसकी अपने में एक विशिष्ट पहचान है। इसका अपना इतिहास है। यहॉ कई भाषाएं और सांस्कृतिक क्षेत्र है। यहॉ जब आधुनिकता आई, तब इसका स्वरूप यहॉ की परम्परा के अनुसार ढल गया। कहीं ऐसा हुआ कि परम्परा आधुनिकता में बदल गई और कहीं आधुनिकता नई परम्परा में आ गई। अतः यूरोप अमेरिका की आधुनिकता यहा आकर बदले हुए भेष में देखने को मिलती है।

भारत में आधुनिकता की उपस्थिति ब्रिटिश काल में मानी जाती है। ब्रिटिश काल में जो आधुनिकता आई वह तकनीकी तंत्र, विचारधारा और मूल्यों के क्षेत्र में थी। जिससे लोगों मे विवेक, बुद्धिसंगतता और मानवतावाद आने लगी। जिसके परिणामस्वरूप विज्ञान तकनीकी तंत्र और शिक्षण संस्थाओं का उदय हुआ । मेकाले द्वारा प्रस्तावित अंग्रेजी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया। अंग्रेजी शिक्षा ने उदार विचारधारा को जन्म दिया। आधुनिकता की धार को प्रखर करने में आजादी की लडाई का योगदान बहुत बडा है। इस लडाई ने हमें समझ दी की जाति व्यवस्था हमारे लिए घातक है। इसी लडाई में हमें राष्ट्रीयता की चेतना दी, विभिन्न रियासतों में बंटे विभिन्न धर्मो के बिखरे लोगों को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया। प्रजातंत्र और समानता के मूल्यों से लोग अवगत हुए। पहली बार स्वतंत्रता एक बहुत बडे मूल्य की तरह हमारे सामने आयी। ये सब लक्षण आधुनिकता के थे। भारत में परंपरागत रूप में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार केवल उच्च वर्ग को था। पर अंग्रेजी शासन काल से जिस आधुनिक शिक्षा का प्रसार हुआ, उनमें बिना किसी जाति भेदभाव के सभी को शिक्षा प्राप्त करने की समान सुविधा उपलब्ध करवाई गई। जिसमें भारत धीरे धीरे आधुनिकता की ओर बढने लगा। शिक्षा न केवल व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार लाती है, अपितु उसका परिचय आधुनिक विचारों, व्यवहार के तरीको तथा मूल्यों से भी करवाती हैं नई शिक्षा की विषय वस्तु प्रकृति में निसंदेह आधुनिकतावाद व उदार थी। यह बात सब पर लागू होती है, चाहे वह मानविकी या समाजविज्ञान या प्राकृतिक एवं व्यवहारिक विज्ञान हो।

शिक्षा भारत में आधुनिकता लाने में सर्वाधिक प्रभावशाली उपकरण है। जिसके फलस्वरूप राष्ट्रवाद, उदारवाद एवं स्वतंत्रता हेतु लोगो की आकांक्षाओं का संक्रियकरण हुआ है। यह एक प्रबुद्ध बुद्धिजीवी वर्ग के विकास के लिये उत्तरदायी है, जिसने न केवल स्वतंत्रता के लिये एक आंदोलन चलाया, अपितु सामाजिक सांस्कृतिक सुधारों के लिए अथक संघर्ष किया। शिक्षा ने विद्यार्थियों की एक उपसंस्कृति को जन्म दिया, जो कि पूरी तरह आधुनिक तो नहीं है परंतु उसमें परम्परा से आधुनिकता की ओर संक्रमण के तत्व है। शैक्षणिक व्यवस्था ने स्कूल, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों की शक्ल में तार्किक रूप से संगठित रूप से संरचनाओं के नये स्वरूपों को विकास के माध्यम से आधुनिकता में योगदान दिया है, जो कि ज्ञान तथा उन सांस्कृतिक संवर्गों के प्रसार हेतु परिवेश में आधुनिक है। सांस्कृतिक जाल का काम करते हैं भारत सरकार द्वारा नियुक्त शिक्षा आयोग 1964–1966 की रिपोर्ट का निम्नलिखित कथन – शिक्षा एवं आधुनिकता के क्षेत्र में अच्छा उदाहरण है। आधुनिकता की प्रक्रिया में सर्वाधिक शक्तिशाली उपकरण विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित शिक्षा है। विज्ञान के वर्तमान युग का एक महान सबक यह है कि समृद्धि किसी भी राष्ट्र की पहुँच में है जिसमें कठोर परिश्रम का संकल्प और इच्छा है तथा जिसकी एक स्थायी और प्रगतिशील सरकार है। इसमें कोई संदेह नही है कि आने वाले वर्षो में भारत को व्यापार और वाणिज्य बढेगा, सभी के लिये और अधिक शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य और एक समुचित जीवन स्तर उपलब्ध होगा। परंतु इन भौतिक उपलब्धियों के लिए भारत का योगदान और अधिक हो सकता है और होना चाहिये। उसे विज्ञान के दोहन को सीखना होगा कि वह विज्ञान का गुलाम ना हो जाये।

शिक्षा ने आधुनिकता की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। शिक्षा प्रसार के कारण भारत में बुद्धिजीवी वर्ग का निर्माण हुआ। भारत में तत्कालिन बुद्धिजीवीयों ने हिन्दू धर्म के धार्मिक ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया तथा अनेक हिन्दू परम्पराए और रूढियों की तार्किक व्याख्या की ।इन बुद्धिजीवियो ने सामाजिक आंदोलनों के माध्यम से हिन्दू धर्म की अनेक रूढियों का तीव्र विरोध कर नवीन मूल्यों की स्थापना की। आधुनिकता एक स्थिति विशेष है जिसे प्राप्त करने के प्रयास किए जाते है। आधुनिकता में प्रौद्योगिकरण के साथ साथ शिक्षा प्रसार व प्रतिव्यक्ति आय का महत्वपूर्ण योगदान है। आधुनिकता की नींव परम्परा के आधार पर रखी जाती है। वर्तमान शिक्षा द्वारा एक सभ्य आधुनिक मानव को तैयार किया जा रहा है।

अतः भारतीय संदर्भ में आधुनिकता नवीन मूल्यों की एक ऐसी व्यवस्था है जो पिछले तीन सौ वर्षो से पश्चिमी राष्ट्रों के विकास से सम्बंधित मनोवृत्ति से प्रभावित होती है। शिक्षा आधुनिकता लाने में महत्वपूर्ण हथियार है। शिक्षा अतार्किक विचारों से मुक्त होकर तार्किक विचारों को विकसित करती है जिसमें प्राथमिक सम्बन्धों के स्थान पर द्वितीयक सम्बन्ध, प्रदत्त पदो के स्थान पर अर्जित पदों एवं आर्थिक समृद्धि, मानवतावाद, समानता, स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता, जनतन्त्रीकरण, तार्किकता, गतिशीलता, आदि आधुनिकता की कुछ प्रौद्योगिकी से नवीन यंत्रों, खादों, संचार साधनों, औद्योगिकरण का विकास, प्रति व्यक्ति एवं राष्ट्रीय आय में वृद्धि नवीन आदर्शो एवं मूल्यों की स्थापना होती है।

संदर्भ ग्रन्थ

Gupta, Dipankar (2000). *Mistaken Modernity*. New Delhi: Harper Collins Publishers.

McGuigan Jim (1999). *Modernity and Postmodern Culture*. Philadelphia: Open University Press.

Stuart Hall, David Held and Tony McGrew (1992. (eds), *Modernity and its Futures*, Oxford: Blackwell Publishers.

Singh, Yogendra (1994). *Modernisation of Indian Tradition*, Jaipur: Rawat Publications.

**** Corresponding Author:***
डा. मोनिका जैन, *प्राचार्य*
मॉडर्न शिक्षा समिति शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर
निवास– 80/427, शंकराचार्य मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
ईमेलः–dr.monika.jain1998@gmail.com मोबाईल –9928070027